CBSE Test Paper 04

Ch-2 ल्हासा की ओर

1. उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?
2. 'हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था।' -उक्त कथन के अनुसार हमारे आचार-व्यवहार के तरीके वेशभूषा के आधार पर तय होते हैं। आपकी समझ से यह उचित है अथवा अनुचित, विचार व्यक्त करें।
3. सुमति गंडे कैसे बनाते थे? वे यह काम क्यों करते थे?
4. ल्हासा की ओर में “मैं अब पुस्तकों के भीतर था’ -ऐसा लेखक ने क्यों कहा?
5. सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग हर गाँव में मिले। इस आधार पर आप सुमति के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का चित्रण कर सकते हैं?
6. लेखक ने जब तिब्बत यात्रा की थी तब वहाँ कानून और सुरक्षा की स्थिति कैसी थी?

CBSE Test Paper 04
Ch-2 ल्हासा की ओर

Answer

1. उस समय तिब्बत में हथियार का कानून न होने के कारण यात्रियों को हमेशा अपने जान और माल का खतरा रहता था। वहाँ के लोग आत्मरक्षा के लिए लाठी के समान खुलेआम पिस्तौल और बंदूक लेकर घूमते रहते हैं। वहाँ अनेक निर्जन स्थान हैं, जहाँ डाकुओं का खतरा रहता है | डाकू पहले यात्रियों को मारते हैं फिर उसका सामान लूटते हैं | वहाँ की सरकार ख़ुफ़िया विभाग और पुलिस पर कम खर्चा करती है जिससे उन स्थानों पर पुलिस का भी प्रबंध नहीं होता है।

2. सामान्यतया लोगों में एक धारणा बन गई है कि पहली बार मिलनेवाले व्यक्ति का आँकलन उसकी वेशभूषा देखकर किया जाता है और जाते समय उसके विचारों से। लोग व्यक्ति की वेशभूषा को देखकर अपने मन में उसके प्रति धारणा बना लेते हैं और उसका मान-सम्मान भी उसके अनुसार ही करते हैं। स्वयं लेखक को भी इन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था |

   मेरे विचार से यह सर्वथा अनुचित है | हमारा आचार-विचार तथा व्यवहार का तरीका व्यक्ति की वेशभूषा के आधार पर तय नहीं होना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि अच्छे कपड़े पहननेवाले इन्सान का स्वभाव भी अच्छा हो | यदि ऐसा होता तो सभी सफेदपोश नेतागण अच्छे व्यक्ति होते। अनेक बार अच्छी वेशभूषा में कुत्सित विचारों वाले लोग भी हो सकते हैं। सस्ते तथा निम्न कपड़े से किसी व्यक्ति निम्नकोटि का नहीं माना जा सकता | कीचड़ में खिलने वाला कमल अपनी सुन्दरता के कारण ईश्वर के चरणों में स्थान पाता है | सादा वेशभूषा धारण करने वाले प्रेमचंद अपने स्वभाव के कारण ही साहित्य जगत में आज तक अपनी पहचान बनाए हुए हैं |

3. सुमति अपने यजमानों में गंडे बाँटा करते थे। ये गंडे बोधगया से लाए होते थे। तिब्बत में उनके यजमानों की संख्या अधिक थी। जब बोधगया से लाए गए गंडे खत्म हो जाते थे तो वे उसी रंग के कपड़े की पतली-पतली चिरियां निकालकर उन्हें बत्तियों में लपेटकर गंडे बना लेते थे। इन गंडों को फिर वे अपने यजमानों को दे देते थे | ऐसा करने के पीछे उनकी लालची प्रवृत्ति थी | उन्हें अपने यजमानों से इसके लिए दक्षिणा स्वरूप धन मिला करता था |

4. लेखक का बौद्ध धर्म के प्रति आस्था और लगाव था। अपनी तिब्बत यात्रा के दौरान उन्हें बौद्ध धर्म को जानने का अवसर मिला। शेकर विहार में एक मंदिर में उन्हें बुद्ध वचन कंजुर की अनुवादित 103 पोथियाँ मिल गईं। बौद्ध धर्म के प्रति रुझान के कारण वह इन पुस्तकों को पढ़ने में रम गया, इसलिए उसने कहा कि मैं अब पुस्तकों के भीतर था।

5. सुमति के यजमान और उनके परिचित हर गाँव में लेखक को मिले। इससे सुमति के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ प्रकट होती हैं, जैसे-

   i. सुमति मिलनसार एवं हँसमुख व्यक्ति हैं |
   ii. सुमति वहाँ के लोगों के लिए धर्मगुरु के समान हैं, जो उन्हें बोधगया से लाए गंडे दिया करते हैं।

iii. वे समय के पाबंद हैं इसलिए लेखक के समय पर न पहुँचने पर वे नाराज़ होते हैं |

iv. वे स्वभाव से लालची प्रवृत्ति के हैं । बोधगया से लाए गंडे समाप्त हो जाने पर वे साधारण कपड़े से गंडे बनाकर अपने यजमानों को देकर उनसेन प्राप्त करते हैं।

v. सुमति बौद्ध धर्म में आस्था रखते थे |

vi. उन्हें तिब्बत की भौगोलिक स्थिति का अच्छा ज्ञान था।

vii. वे आतिथ्य सत्कार में कुशल थे। उन्होंने लेखक का इंतज़ार करते हुए चाय को तीन बार गर्म किया और अकेले चाय नहीं पी |

6. लेखक ने जब तिब्बत की यात्रा की थी तब वहाँ कानून और सुरक्षा की स्थिति बहुत खराब थी। वहाँ की सरकार पुलिस और ख़ुफ़िया विभाग पर अधिक खर्चा नहीं करती थी इसलिए कानून व्यवस्था ढीली थी। हथियारों का कानून न होने के कारण लोग बंदूक को लाठी-डंडे की तरह लेकर घूमते थे।